आतंकवाद और कश्मीरी औरतें

डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्मा

जब–जब विश्व के किसी भी क्षेत्र में आतंकवाद पनपता है तो मुख्य रूप से वहां की औरतों को उसका शिकार होना पड़ता है। इन निसहाय औरतों को क्या–क्या मानसिक वेदनायें और यातनायें झेलनी पड़ती हैं। उसकी कल्पना कर पाना बहुत ही कठिन कार्य है क्योंकि इस अमानवीय हिंसा के आक्रोश का प्रभाव सबसे अधिक औरतों पर ही पड़ता है जिनको आतंकवादियों के वैहशियाना कुकृत्यों का ख़मियाज़ा उठाना पड़ता है।

धरती का स्वर्ग कही जाने वाली कश्मीर घाटी में लगभग गत 17 वर्षों से निरूदेश्य हिंसा का तांडव नृत्य चल रहा है जिस पर सरकार की लिबलिबी और मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण अभी तक कोई भी प्रभावशाली अंकुश नहीं लगाया जा सका है। सरकार की इस ढुलमुल नीति का पूरा लाभ घाटी में सक्रिय विभिन्न आतंकवादी गुट और संगठन उठा रहे हैं जो धर्म के नाम पर घाटी में भाड़े के विदेशी मुजाहिदों की घुस पैठ करा कर वहां की आम शान्ति प्रिय जनता के लिये चरस बो कर उनको वहां से अपनी सुरक्षा के लिये देश के अन्य अंचलों में पलायन करने को बाध्य कर रहे हैं। जो भी समाज के वर्ग इस विकृत मानसिकता तथा दूषित विचार धारा के पक्षधर नहीं हैं उन निसहाय लोगों को गोली दाग़ कर टपका दिया जाता है ताकि भय और आतंक का वातावरण बना रहे और विरोध के स्वर अधिक प्रस्फुटित न होने पायें। इन आतंकियों द्वारा ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाता है कि उस का भरपूर फ़ायदा उठा कर असामाजिक तथा अराजक तत्व घाटी में ग़दर मचा कर अपना पूरा लाभ उठा सके क्योंकि हर आतंकवादी संगठन का मुख्य उद्देश्य घाटी में अशान्ति बनाये रखना है ताकि उनकी दुकानें बिना किसी रोक–टोक के चलती रहें।

कश्मीर घाटी में विगत 17 वर्षों से चल रही इस आतंकी हिंसा के दौर में कदाचित कोई घर बचा हो जो इसकी लपेट में न आया हो। इस आतंकवाद के रूप में पाकिस्तान द्वारा भारत के विरूद्ध चलाये जा रहे छद्म युद्ध में सबसे अधिक पीड़ा कश्मीरी महिलाओं को झेलनी पड़ रही है। यद्यपि इस हिंसा में सबसे अधिक पुरूष मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं पर महिलाओं को अपने निकट के सम्बंधियों को खोने के अलावा लूट–मार तथा सामूहिक बलात्कार के बाद अपना जीवन पुनः नये सिरे से प्रारम्भ करने को विवश होना पड़ता है जो वास्तव में उनके लिये बहुत अधिक पीड़ादायक तथा मानसिक रूप से अपने को समाज में स्थापित कर पाने में किसी यातना से कम नहीं होता क्योंकि आत्मग्लानी जीवन पर्यन्त पीढ़ा करती रहती है।

एक सामाजिक संस्था द्वारा लगभग 6 वर्ष पूर्व किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार अब कश्मीर घाटी में अनेक ऐसे परिवार है जहां एक भी पुरूष जीवित नहीं बचा है। उसकी रिपोर्ट के अनुसार लगभग 7012 लड़कियां अनाथ हो चुकी हैं। जिनके माता–पिता अब इस संसार में नहीं हैं। बहुत बड़ी संख्या में ऐसी विधवा हुई महिलायें हैं जिनकी आयु अभी बहुत कम है और जिन्होंने अपने जीवन के बहुत कम बसन्त देखे हैं। जो अपने अरमानों के स्वप्न अपनी आंखों में संजो कर बैठी है। सन् 1989 से

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रारम्भ हुए इस छद्म युद्ध में हज़ारों की संख्या में पुरूष अब तक लापता हो चुके हैं और यह क्रम निरन्तर जारी है। पिछले एक दशक में हजारों की संख्या में युवतियां आतंकवादियों तथा भाड़े के मुजाहिदों की काम वासना का शिकार हो चुकी है। आतंकवादी केवल इस शंका पर कि अमुक घर का व्यक्ति सुरक्षाबलों के लिये मुख़बिरी करता है या उनको आतंकवादियों के ठिकानों की सूचनायें उपलब्ध कराता है उसके घर की महिलाओं के साथ जम कर सामूहिक बलात्कार करते हैं ताकि उसको उसकी हरकतों के लिये एक सबक सिखाया जा सके और अन्य स्थानीय नागरिक इस प्रकार का कार्य करने का साहस न जुटा सकें। वहीं कभी–कभी आतंकवादी किसी परिवार में भय उत्पन्न करने के लिये भी इस प्रकार का घृणित कार्य करते हैं।

आतंकवाद के नाम पर कश्मीरी महिलाओं का बहुत बड़ी संख्या में यौन शोषण स्वयं एक विकराल सामाजिक समस्या बन चुका है कि किस प्रकार उनका समाज में उचित पुर्नवास किया जाये। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार किसी महिला के साथ बलात्कार करना वास्तव में अपने शत्रु को नीचा दिखाने या फिर उनको शर्मिन्दा करने की एक बहुत प्राचीन मानसिकता है जो आदिकाल से चली आ रही है और जिसका समय समय पर विभिन्न परिस्थितियों में एक शस्त्र के रूप में प्रयोग होता रहा है जिसके द्वारा अपने शत्रु का मनोबल नष्ट कर उस पर सहजता से विजय प्राप्त की जा सके। वैसे भी प्राचीन समय में युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिये विषकन्याओं का प्रयोग होता रहा है। राजा इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिये मेनका नामी अपसरा का प्रयोग किया था जो बहुत ही सफ़ल रहा था। यद्यपि इस प्रक्रिया में शारीरिक और मानसिक रूप से महिलाओं को ही प्रताड़ित होना पड़ता है पर वृहद रूप से बलात्कार को पूरे समुदाय पर हमला माना जाता है। अतः इसका एक ब्रह्मास्त्र के रूप में यदा–कदा खुल कर प्रयोग किया जाता है।

एक क्रूर प्रताड़ना और मानसिक वेदना के अतिरिक्त अलगाववाद और अशान्ति का प्रभाव सबसे अधिक कश्मीर की महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ा है। घाटी में सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित स्वास्थ्य सेवाओं के धाराशाही होने का प्रभाव भी सबसे अधिक घाटी की ही महिलाओं पर पड़ा है। समय समय पर विभिन्न आतंकवादी गुटों द्वारा जारी धमकियों के कारण घाटी में चल रही परिवार कल्याण तथा परिवार नियोजन से सम्बंधित अनेक क्रान्तिकारी योजनायें या तो बुरे तरीक़े से चरमरा गई हैं या फिर पूर्ण रूप से ठप हो गयी हैं। जिसका स्वाभाविक रूप से सीधा प्रभाव महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। वे न चाहते हुए भी अधिक संख्या में बच्चे पैदा करने को मजबूर हैं क्योंकि उनके पास गर्भ निरोधक सामग्री का अभाव है और इस प्रकार के साधनों का प्रयोग करना उनके धर्म में वर्जित है।

बलात्कार की शिकार नवयुवतियां गर्भ धारण करने के पश्चात लाचारी में अपनी तथा अपने परिवार की लाज बचाने के लिये अनपढ़ तथा अप्रशिक्षित दाईयों से चोरी छिपे अवैध रूप से गर्भपात कराती हैं जिसमें उन्हें अपनी जननेद्रियों से सम्बंधित अन्य रोगों का शिकार होना पड़ता है क्योंकि यह अप्रशिक्षित दाईयां कभी कभी गर्भवती महिला के गर्भाशय को भी नुकसान पहुँचा देती हैं जिससे वे भविष्य में गर्भधारण करने की सामर्थ सदा के लिये खो बैठती हैं।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वहीं परिवार नियोजन के उचित सनसाधनों के अभाव में बहुत बड़ी संख्या में लड़कियां कम उम्र में ही गर्भ धारण कर रही हैं जो उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है और उनमें से कुछ अवैध गर्भपात करा रही हैं जिसके कारण महिलाओं की कम उम्र में मृत्यु की दर लगातार बढ़ रही है। क्योंकि स्त्रियों के उपचार के उचित साधन उपलब्ध नहीं हैं और न ही समय रहते उनको सही चिकित्सा का परामर्श मिल पाता है।

घाटी के सुदूर गांवों में स्थिति और भी शोचनीय हैं। वहां उपयुक्त चिकित्सा की सुविधायें प्राय नगण्य हैं। यहां महिलायें अनेक रोगों से ग्रस्त हैं पर उनका उपचार करने वाला वहां कोई कुशल चिकित्सक उपलब्ध नहीं है। वहां से काफी बड़ी संख्या में नर्सों तथा डाक्टरों के घाटी से देश के अन्य अंचलों में पलायन कर जाने के पश्चात इन सेवाओं को उचित प्रकार से चलाना अब प्रायः असम्भव हो गया है जिसके परिणाम स्वरूप वहां की आम जनता में तरह तरह की बीमारियों से ग्रसित हो जाने की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। उचित सुविधायें न मिलने के कारण महिलायें मुख्य रूप से खून की कमी, कैलशियम तथा मानसिक तनाव का शिकार हो रही हैं। प्रशिक्षित डाक्टरों तथा मेडिकल स्टाफ़ की कमी के कारण घाटी में बहुत से अस्पताल सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पा रहे हैं और वह रोगियों को उचित स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवायें
उपलब्ध कराने में अपने को असमर्थ पा रहे हैं। इसका प्रभाव निश्चित रूप से महिलाओं की कार्य क्षमता पर भी पड़ रहा है क्या कभी कोई समाज जिसकी महिलाओं की इस प्रकार की दुर्दशा हो उन्नति कर सकता है। महिलाओं को अपमानित और तिरस्कृत कर कभी किसी समाज का उत्थान नहीं हुआ। जिस समाज ने महिलाओं की शक्ति का निरादर किया वह समाज इतिहास इस बात का साक्षी है कभी पनप नहीं पाया और अन्तोगत्वा वह रसातल में मिल गया। यह नारी सशक्तिकरण का युग है अतः हमें समाज में महिलाओं को एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाने का प्रयत्न करना चाहिये क्योंकि भारतीय संस्कृति में स्त्री को जननी माना गया है। शशी कला सपना के शब्दों में –

''ज़र्रा–ज़र्रा होकर बंटती रही है ज़िन्दगी मेरी
कभी नहीं संभली बिखरती रही है ज़िन्दगी मेरी
अंधेरी दुनियां को उजाला तो मिलेगा कभी
उजाले की खोज में भटकती रही है ज़िन्दगी
मेरी।।

(डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्मा)
मनोहर निवास,
कश्मीरी मोहल्ला,

लखनऊ – 226 003

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com